एकलव्य के नए प्रकाशन
वर्ष 2023 से 2025

बाल साहित्य

पठनशील समाजों में किताबों के साथ दोस्ती के पहले पायदान पर हैं चित्रकिताबें और चित्रकथाएँ। छोटे बच्चे, जो पढ़ नहीं पाते या जो पढ़ना सीख रहे हैं, उन्हें वही किताबें भाती हैं जिनमें बड़े और सुन्दर चित्र हों। बड़े आकार के अक्षर पढ़ना सीखने में सहायक होते हैं। इस दृष्टि से चित्रकिताबें और चित्रकथाएँ बहुउपयोगी माध्यम हैं।

बोर्ड बुक

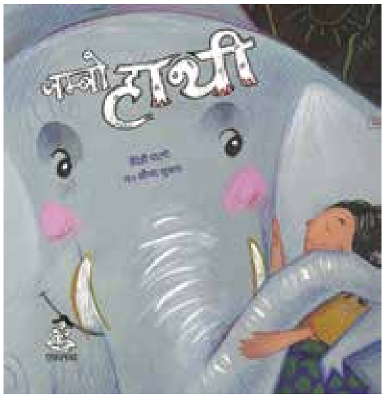

जम्बो हाथी

बचपन की पहली किताब, जिसे पलटने का मन करे बार-बार। रंग-बिरंगी, शब्दों व आवाज़ों से खेलती, छूने व महसूस करने के मौके देती।

वैदेही पाटणे
चित्र: सौम्या शुक्ला
ISBN: 978-93-94552-79-1
आकार: 6" x 6"
पृष्ठ संख्या: 12

Sea

What's under the sea? Let's turn, slide and see. Presenting Eklavya's first sliding board book.

Translator: Ranjitha Seshadri
Illustrator: Amandine Laprun
ISBN: 978-93-94552-53-1
Size: 6.5" x 6.5"
Pages: 12

This book is also available in Hindi

समन्दर
ISBN: 978-93-94552-34-0

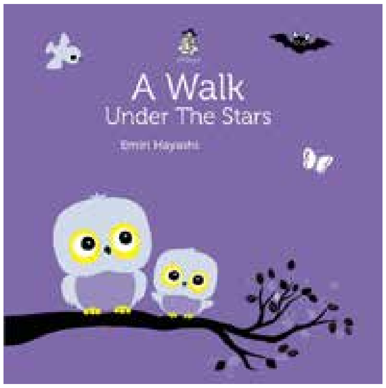

A Walk Under The Stars

What does the world look like, at night, under the sky? Wait before you turn the page buddy. Slide it first to find out.

Translator: Madhuri Tiwari
Illustrator: Emiri Hayashi
ISBN: 978-93-94552-55-5
Size: 6.5" x 6.5"
Pages: 12

This book is also available in Hindi

तारों की छाँव में सैर
ISBN: 978-93-94552-54-8

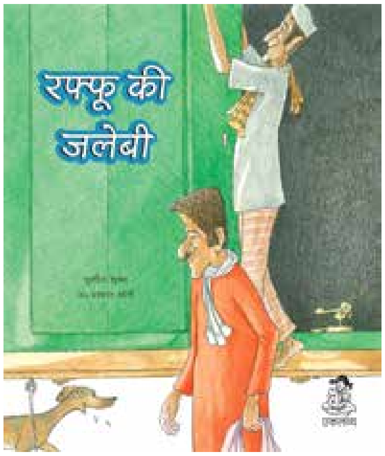

रफ्फू की जलेबी

शब्दों के खेल और लय के जादू से बुनी यह कविता रफ्फू और उसकी मशहूर जलेबियों की अनोखी दुनिया में ले जाती है। रफ्फू की दुकान पर उमड़ती भीड़, चाशनी में डूबती जलेबियों की खुशबू और हर किसी के चेहरे पर मुस्कान – ये सब इस कविता को स्वाद और मस्ती से भरपूर बनाते हैं।

सुशील शुक्ल
चित्र: प्रशान्त सोनी
ISBN: 978-93-91132-99-6
आकार: 8" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 28

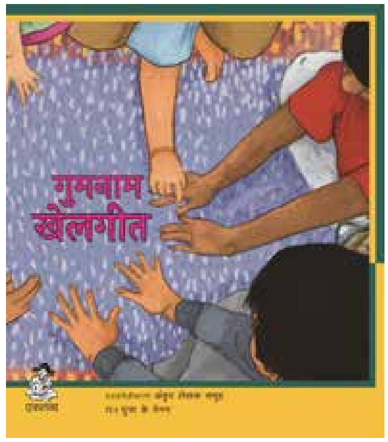

गुमनाम खेलगीत

यह किताब बच्चों के उन खेलगीतों को सामने लाती है, जो आधुनिकता की दौड़ में कहीं गुम हो गए हैं। मस्ती से भरपूर इन गीतों में न केवल गुनगुनाने का मज़ा है, बल्कि मौखिक संस्कृति की विरासत की झलक भी मिलती है।

दस्तावेज़ीकरण: अंकुर लेखक समूह
चित्र: पूजा के मेनन
ISBN: 978-93-94552-90-6
आकार: 7.5" x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 52

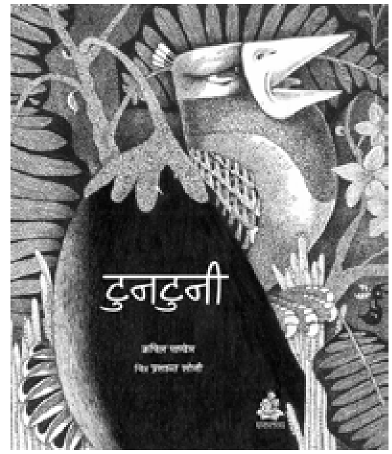

टुनटुनी

यह कहानी है नाचने-गाने की शौकीन एक छोटी-सी चिड़िया की। एक दिन उसके पैर में एक फोड़ा निकल आया और फिर शुरू हुआ उसकी मुसीबतों का सिलसिला। शाही हज़्ज़ाम से लेकर राजा तक और फिर गाय से मच्छर तक ना जाने किस-किस से टुनटुनी ने मदद माँगी। क्या टुनटुनी की मुसीबत हल हुई? पढ़िए टुनटुनी की दास्ताँ।

कपिल पाण्डेय
चित्र: प्रशान्त सोनी
ISBN: 978-93-94552-56-2
आकार: 8" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 28

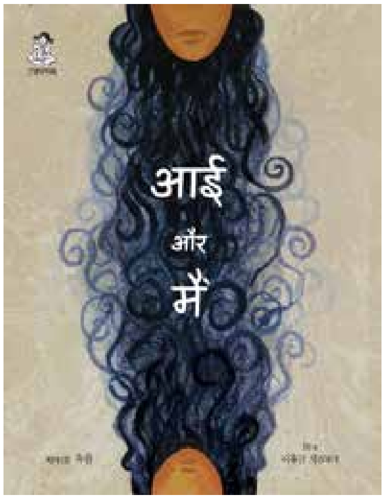

आई और मैं

यह कहानी है एक छोटी बच्ची और उसकी आई के बीच के गहरे प्रेम और स्वीकार्यता की। बच्ची की आई लम्बे समय बाद घर लौटती हैं – मुस्कुराती हुई, लेकिन कुछ बदली हुई। यह बदलाव बच्ची के लिए एक पहेली है। वह अपनी आई की पहले जैसी छवि और उनकी नई सच्चाई के बीच झूलती है। इन्सानी रिश्तों की दिल छू लेने वाली कहानी।

ममता नैनी
चित्र: संकेत पेठकर
अँग्रेज़ी से अनुवाद: सुशील जोशी
ISBN: 978-93-94552-84-5
आकार: 8.25" X 10.75"
पृष्ठ संख्या: 40

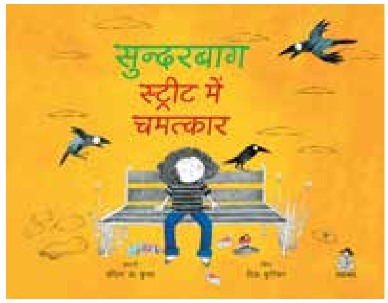

सुन्दरबाग स्ट्रीट में चमत्कार

यह कहानी है ज़ारा और उसकी अनोखी दोस्त मिस गप्पी की। मिस गप्पी ज़ारा को एक आइडिया देती हैं। और फिर शुरुआत होती है एक मिशन की, जो ना सिर्फ ज़ारा की बल्कि सुन्दरबाग स्ट्रीट के लोगों की ज़िन्दगी भी बदल देता है। तो चलो, ज़ारा के साथ इस मिशन पर चलें। यह किताब न केवल पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाती है, बल्कि हमें अपने आसपास की सम्भावनाओं को पहचानने के लिए प्रेरित भी करती है।

नंदिता डा कुन्हा
चित्र: प्रिया कुरियन
अँग्रेज़ी से अनुवाद: यशोधरा कनेरिया
ISBN: 978-81-963643-1-1
आकार: 11" X 8.25"
पृष्ठ संख्या: 28

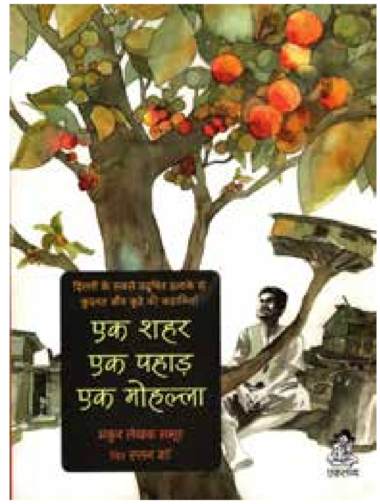

एक शहर, एक पहाड़, एक मोहल्ला

पहाड़ों पर शहर तो उगते आए हैं, पर शहरों में पहाड़ उगते हुए देखना सबसे हैरतअंगेज़ परिघटना है।
इस पहाड़ – जिसे अँग्रेज़ीदा लोग 'लैंडफिल' और उसके अंचल में रहने वाले देसी ज़बान बोलने वाले 'कूड़ा-पहाड़' कहते हैं – की तलहटी में कई मोहल्ले उग आए हैं, जो उसी कबाड़ से जीवन जुगाड़ते हैं और उसे चलाए रखते हैं। प्रदूषण ही वहाँ की प्रकृति है, रोज़गार है, सौन्दर्य है; गोया दिल्ली शहर का कूड़ेदान एक बागान भी है। ये कहानियाँ हर मुकाम, हर मोड़ और हर शहर में पड़ी मिल जाएँगी।

अंकुर लेखन समूह
चित्र: एलन शाँ
ISBN: 978-81-19771-96-7
आकार: 7" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 136

एकलव्य

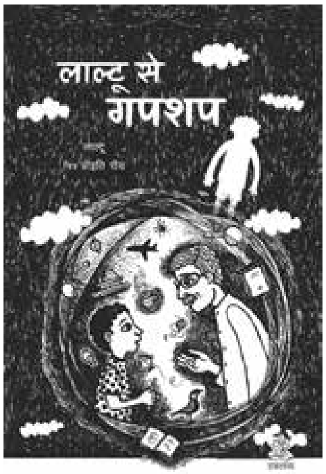

लाल्टू से गपशप

किस्से दोस्ती के, बाल मन में चल रही उथल-पुथल के, सवाल-जवाब के... किस्से, जो न सिर्फ गुदगुदाते हैं बल्कि बच्चों की ज़िन्दगी में झाँकने का भी मौका देते हैं।

लाल्टू
चित्र: प्रोइति रॉय

ISBN: 978-93-94552-92-0
आकार: 5.5" x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 48

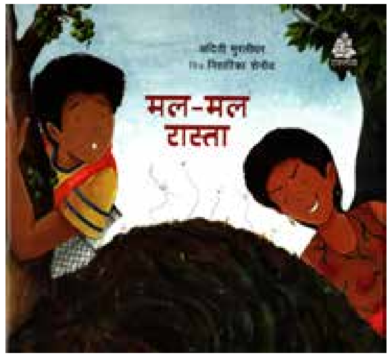

मल-मल रास्ता

पंख, काँटे, बाल, छोड़ी हुई त्वचा, खरोंच के निशान, खाने के चिह्न, शिकार के अवशेष, गन्ध, पैरों के निशान, मल आदि के रूप में जंगली जानवर कई तरह के सुराग छोड़ते हैं जिनसे आप उनको पहचान सकते हैं। यह कहानी तरह-तरह के मल-चिह्नों का पीछा करते हुए आपको पश्चिमी घाट पर स्थित चोरला इलाके के वन्यजीवों को देखने-जानने-पहचानने का एक मौका देती है।

अदिती मुरलीधर
चित्र: निहारिका शेनॉय
अँग्रेज़ी से अनुवाद: पूनम जैन

ISBN: 978-93-94552-98-2
आकार: 9" x 9.25"
पृष्ठ संख्या: 32

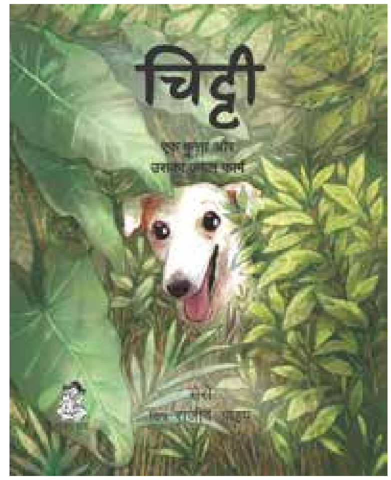

चिट्टी

कर्नाटक के पश्चिमी घाटों के एक जंगल फार्म में रहने वाली आज़ाद कुत्ता। घाट के घने और नम जंगल में, कई मेहमान जानवरों के बीच चिट्टी अपनी सहजवृत्ति से इन सबसे दोस्ती निभाती जाती है। समय के साथ शहर से आई यह बेहद समझदार संवेदनशील कुत्ता जंगल में घुलती जाती है।

हम – इन्सान, कुत्ते, जंगल, तारे, बारिश, फफूँद, नदियाँ, बिच्छू, लंगूर, जोंक, फल, फूल – प्रकृति हैं। तो इस विशाल और विस्तृत प्रकृति में कैसे कोई एक कुत्ता किसी एक इन्सान के जीवन पर प्रभाव डालती है, यह इस किताब के ज़रिए बड़ी सहजता से महसूस किया जा सकता है।

सेरो
चित्र: राजीव आइप
अँग्रेज़ी से अनुवाद: जितेन्द्र 'जीत'

ISBN: 978-93-94552-95-1
आकार: 8" x 10"
पृष्ठ संख्या: 44

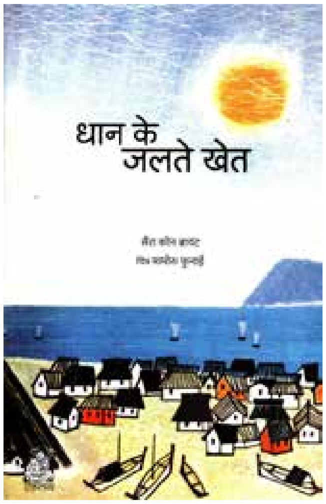

धान के जलते खेत

यह कहानी है जापान के एक छोटे से गाँव की, जहाँ एक बूढ़ा किसान और उसका पोता धान के खेतों की देखभाल करते थे। एक दिन बूढ़े ने जान-बूझकर कीमती धान के खेतों को आग के हवाले कर दिया। आखिर बूढ़े ने ऐसा क्यों किया? साहस, सूझबूझ और मानवता से भरी दिल छू लेने वाली कहानी।

सैरा कोन ब्रायंट
चित्र: मामोरु फुनाई
अँग्रेज़ी से अनुवाद: अरविन्द गुप्ता
ISBN: 978-81-963643-2-8
आकार: 5.5" x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 28

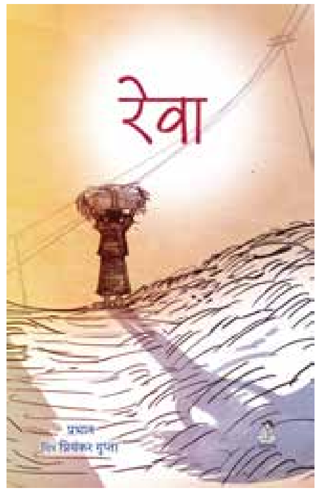

रेवा

एक गहरी संवेदनशील कहानी जो बचपन की मासूमियत, संघर्ष और सामाजिक असमानताओं के बीच पनपते रिश्तों को उजागर करती है। यह कहानी रेवा और पलाश के ज़रिए दोस्ती, बचपन के सपनों और कठोर वास्तविकताओं की टकराहट को मार्मिक रूप में प्रस्तुत करती है। दिल को छूने वाली यह कहानी समाज के कई छिपे हुए पहलुओं पर सवाल भी उठाती है।

प्रभात
चित्र: प्रियंकर गुप्ता
ISBN: 978-93-48176-85-1
आकार: 5.5" x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 48

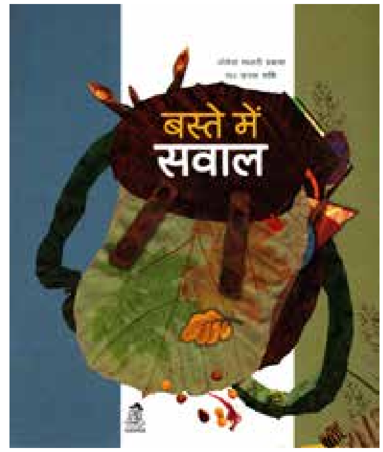

बस्ते में सवाल

एक खूबसूरत कहानी जिसमें एक बच्चे को अपने बैग में एक बीमार सवाल मिलता है। और फिर शुरू होता है सिलसिला उस बीमार सवाल के इलाज को खोजने का। इस खोजबीन में उस बच्चे के भाई-बहनों के साथ-साथ प्रकृति के तमाम जीव भी शामिल हो जाते हैं। आखिर क्या था उस सवाल में ऐसा? और क्या था उसका इलाज?

लोकेश मालती प्रकाश
चित्र: कनक शशि
ISBN: 978-93-94552-97-5
आकार: 8" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 24

जंगल में एक रात

यह कविता जंगल की रात की शान्ति को एक अनूठे ढंग से प्रस्तुत करती है। यह किताब पाठक को रात की शान्ति, सूक्ष्म आवाज़ों को देखने-सुनने, महसूस करने के लिए आमंत्रित करती है जिन्हें हम दिन की हलचल और शोर में अक्सर अनदेखा कर देते हैं।

सुशील शुक्ल
चित्र: प्रशान्त सोनी
ISBN: 978-93-94552-99-9
आकार: 9.5" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 32

मैं - अली!

यह कहानी है सरहद पास के गाँव में रहने वाले अली की। तीन साल की उम्र में अली रातोंरात अपने परिवार से अलग हो जाता है। सालों बाद उसे सरहद पार के गाँव में रह रहे अपने परिवार के बारे में पता चलता है। क्या अली उनसे मिल पाता है? जंग के कारण बिछड़े परिवारों के दर्द को बयाँ करती एक संवेदनशील कहानी।

सुजाता पद्मानाभन
चित्र: तनुश्री रॉय पॉल
अँग्रेज़ी से अनुवाद: विनता विश्वनाथन
ISBN: 978-93-48176-32-5
आकार: 8" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 20

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध

It's me, Ali!

ISBN: 978-93-48176-47-9

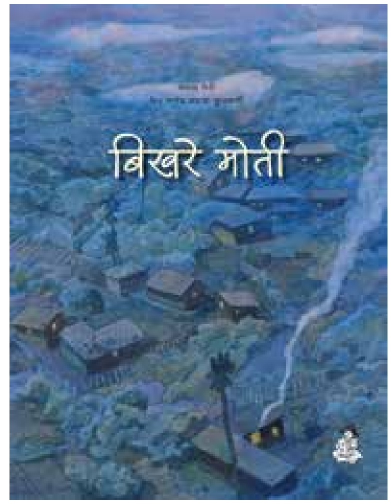

बिखरे मोती

महुआ का मौसम आ गया है। कई गाँवों में तो लगभग सारे के सारे घरों के लोग महुआ बीनने जंगल गए हैं। ऐसे ही एक गाँव में महुआ बीनने के लिए जंगल की ओर जा रहे एक परिवार के सफर को बयाँ करती है यह कहानी।

महुआ के पेड़ों से आती भीनी-भीनी खुशबू, सूखे पत्तों की चरमराहट और इस पेड़ के इर्द-गिर्द घूमते ग्रामीण जीवन के पहलुओं को उकेरती एक खूबसूरत किताब।

ममता नैनी
चित्र: भार्गव प्रकाश कुलकर्णी
ISBN: 978-93-48176-27-1
आकार: 8" x 10.5"
पृष्ठ संख्या: 24

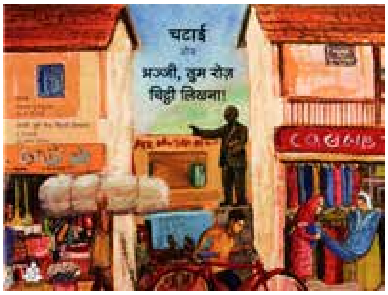

चटाई और अज्जी, तुम रोज़ चिट्ठी लिखना!

'चटाई' कहानी है एक बच्चे और एक बूढ़ी खाला के बीच के रिश्ते की। एक दिन खाला उससे एक चटाई मँगवाती हैं। कुछ तरकीब भिड़ाकर वह चटाई तो ले आता है, पर चटाई लाने के बाद से अजीबोगरीब घटनाओं का सिलसिला शुरू हो जाता है। क्या है चटाई का राज़?

'अज्जी तुम रोज़ चिट्ठी लिखना!' कहानी कर्नाटक के एक गाँव और वहाँ के पारिवारिक जीवन की जीवन्त झलक पेश करती है। चिट्ठियों से शुरू होकर, यह कहानी एक बड़े संयुक्त परिवार के त्योहार की तैयारियों, सफर की हलचल और गाँव में बिताए गए खास दिनों का दिलचस्प चित्रण करती है। परिवार और रिश्तों की गरमाहट को बयाँ करती एक खूबसूरत कहानी।

मोहम्मद मुजीबुद्दीन
दु सरस्वती
चित्र: के पी रेजी, महेश बालिगा
ISBN: 978-93-48176-92-9
आकार: 11" X 8.5"
पृष्ठ संख्या: 32

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
The Mat and Write Every Day, Ajji
ISBN: 978-81-19771-60-8

क्या, है क्या ये?

एक शाम नागपुर के एक अपार्टमेंट के बाहर एक जीव फँस जाता है। कोई उसे तेंदुए का बच्चा समझता है, तो कोई उड़ने वाला जानवर। कौन है ये रहस्यमयी जीव? क्या उसके राज़ से पर्दा उठ पाएगा?
वन्यजीवों के संघर्ष और इन्सानों के साथ उनके जटिल रिश्तों की झलक दिखलाती एक रोमांचक कहानी!

कहानी व चित्र: रोहन चक्रवर्ती
ISBN: 978-93-48176-56-1
आकार: 8.25" x 11"
पृष्ठ संख्या: 36

आकरू के सींग मुड़ कैसे गए?

यह दिलचस्प कहानी है एक रहस्यमय जानवर आकरू की, जिसके सींग पहले लम्बे और सीधे हुआ करते थे। दिबांग घाटी के इदु मिश्मी समुदाय की यह कहानी न केवल रोमांचक है, बल्कि प्रकृति और संस्कृति के गहरे रिश्तों को समझने का एक नया दृष्टिकोण भी प्रदान करती है।

अम्बिका अय्यादुरई और
ममता पंड्या
चित्र: श्रोबोन्तिका दासगुप्ता
ISBN: 978-93-48176-20-2
आकार: 8" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 24

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Why are the Ākrū's horns curved?
ISBN: 978-93-48176-86-8

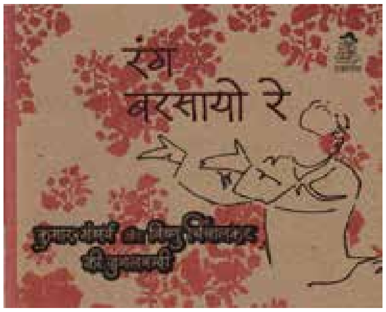

रंग बरसायो रे

कुमार गन्धर्व द्वारा गाई गईं होली गीत की पंक्तियों और गुरुजी विष्णु चिंचालकर द्वारा उकेरी गईं कुमारजी की विभिन्न मुद्राओं से सजी एक अनोखी किताब।

कुमार गन्धर्व
चित्र: विष्णु चिंचालकर
ISBN: 978-93-48176-13-4
आकार: 7.5" x 6"
पृष्ठ संख्या: 20

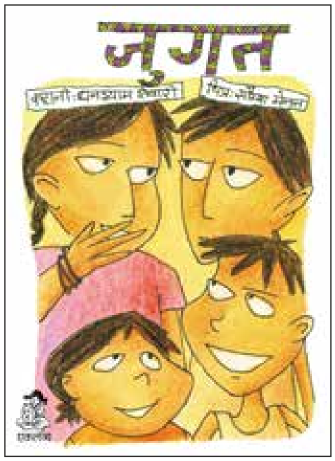

जुगत

बचपन की मासूमियत और रचनात्मकता को दर्शाती एक मनोरंजक कहानी। यह बच्चों की समस्याओं को हल करने की अनोखी और मज़ेदार तरकीबों को बयाँ करती है।

घनश्याम तिवारी
चित्र: सौम्या मेनन
ISBN: 978-93-48176-87-5
आकार: 6" x 7.5"
पृष्ठ संख्या: 16

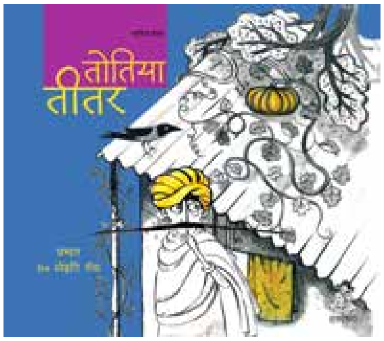

तोतिया तीतर

कवि प्रभात की चार पंक्तियों वाली मज़ेदार कविताओं का नया संकलन। सरल शब्दों और तुकबन्दी से बुनी ये मस्ती भरी हल्की-फुल्की रचनाएँ पढ़ना सीखने की शुरुआती पायदानों पर खड़े पाठकों के लिए पढ़ने का मज़ा देती हैं।

प्रभात
चित्र: प्रोइति रॉय
ISBN: 978-81-19771-56-1
आकार: 8.5" x 7.5"
पृष्ठ संख्या: 40

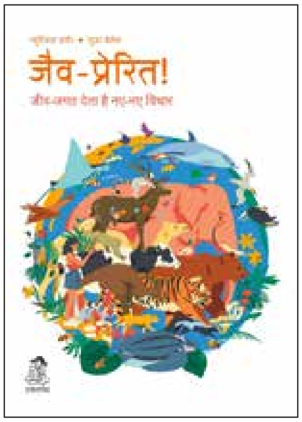

पृथ्वी पर जीवन लाखों सालों में धीरे-धीरे विकसित हुआ, पर कोई भी खतरा उसे पूरी तरह से मिटा नहीं पाया।

लेकिन, पिछली कुछ सदियों में, अनेक असन्तुलन सामने आए हैं। मनुष्यों ने कोयला या पेट्रोल जैसे ईंधन निकालकर जीवाश्म ऊर्जा भण्डारों को लगभग खाली कर दिया है। इन ईंधनों के जलने से हवा प्रदूषित हुई है और वातावरण गरम हो रहा है।

बेशक, इसका कोई एक जादुई उपाय नहीं है। लेकिन विविध जीवों और प्रकृति में उनकी भूमिकाओं का अवलोकन कर, हम उनसे आविष्कार और नवाचार की प्रेरणा ले सकते हैं, जो पृथ्वी और उसके अन्य वासियों के साथ सन्तुलन वापस पाने में हमें मदद कर सकते हैं।

जैव प्रेरित!

जीव-जगत देता है नए-नए विचार

म्यूरिअल ज़र्चर
चित्र: सुआ बेलेक
फ्रांसीसी से अनुवाद: माधुरी तिवारी
ISBN: 978-81-19771-97-4
आकार: 8.25" x 11"
पृष्ठ संख्या: 68

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध

Bio-inspired!

The living world shows the way

ISBN: 978-81-19771-67-7

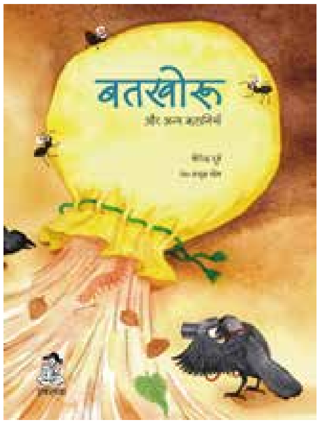

बतखोरू और अन्य कहानियाँ

खट्टे-मीठे किस्से-कहानियों का यह संग्रह कभी मुस्कराने पर मजबूर करता है, तो कभी चमत्कारों की गुत्थियों में उलझा देता है। इन किस्सों-कहानियों में मिलेंगे बातूनी चूहा, मूँछों वाले मेंढक मुन्नू, खुद से सवाल-जवाब करती बतखोरू और फोटोग्राफी के शौकीन कौए जैसे अनोखे किरदार।

वीरेन्द्र दुबे
चित्र: मयूख घोष
ISBN: 978-93-48176-08-0
आकार: 7" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 40

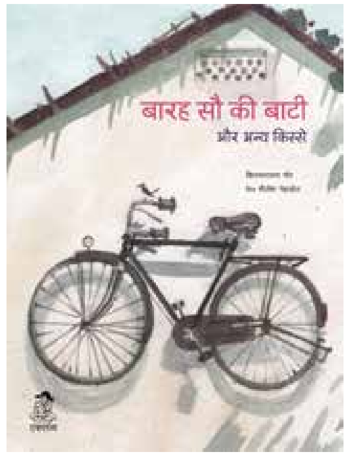

बारह सौ की बाटी और अन्य किस्से

एक दिलचस्प कहानी संग्रह। यह पाठकों को अनोखे पात्रों और रोज़मर्रा की घटनाओं से भरी ऐसी दुनिया में ले जाता है जहाँ जीवन की खुशियों का जादू बिखरा हुआ है। ग्रामीण और शहरी जीवन की झलकियाँ दिखाती ये कहानियाँ मानवीय भावनाओं और रिश्तों को हास्य और संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं।

शिवनारायण गौर
चित्र: नीलेश गेहलोत
ISBN: 978-93-48176-03-5
आकार: 7" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 40

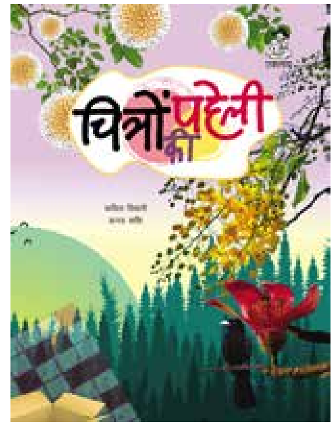

चित्रों की पहेली

चित्रों में छिपे इशारों को समझकर शब्दों को बूझने की यह पहेलियाँ बच्चों व बड़ों सभी को आकर्षित करती हैं। यह पहेलियाँ न सिर्फ दिमागी कसरत का बेहतरीन तरीका हैं, बल्कि भाषाई ज्ञान को समृद्ध करने का ज़रिया भी हैं। इस संकलन में कुछ गणित के सुडोकू भी शामिल हैं।

शब्दों व अंकों की दिलचस्प दुनिया की सैर पर ले जाती एक किताब।

कविता तिवारी और कनक शशि
ISBN: 978-93-94552-59-3
आकार: 7" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 64

एकलव्य

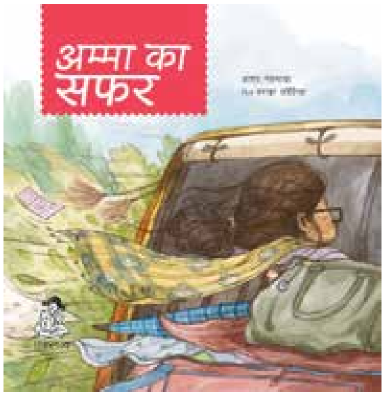

अम्मा का सफर

अम्मा को ट्रेन पकड़नी है और उन्हें देर हो रही है। अम्मा नीना और अबु से सामान बाँधने में मदद माँगती हैं। हड़बड़ी में वे कुछ ऐसी बातें कहती हैं जो चकरा देने वाली हैं। और इस चक्कर में उनके बैग में कुछ अजीब-सी चीज़ें पैक हो जाती हैं। एक दिलचस्प सफर की तैयारी की मज़ेदार कहानी।

आशा नेहमाया
चित्र: बरखा लोहिया
ISBN: 978-93-94552-78-4
आकार: 9" x 9.25"
पृष्ठ संख्या: 24

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Amma's Journey
ISBN: 978-93-94552-30-2

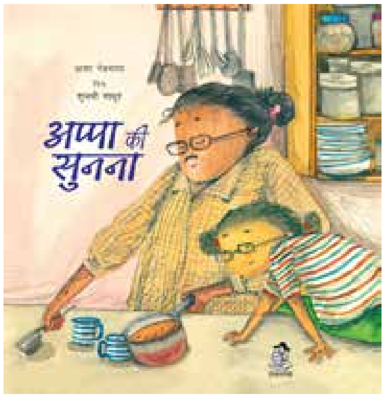

अप्पा की सुनना

अप्पा पाटी (दादी) के घर जाने के लिए निकल रहे थे। कला को भी उनके साथ जाना था। अम्मा ने इजाज़त तो दी, मगर इस एक शर्त पर कि अप्पा की सुनना। और कला ने ठीक वैसे ही किया। फिर भी, पता नहीं क्यों उनका दिन इतना गड़बड़ और अनपेक्षित चीज़ों से भरा गुज़रा... पापा और उनकी लाड़ली बच्ची के जीवन के एक गड़बड़ दिन की मज़ेदार कहानी।

आशा नेहमाया
चित्र: शुभश्री माथुर
ISBN: 978-93-94552-74-6
आकार: 9" x 9.25"
पृष्ठ संख्या: 16

अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध
Listen to Appa
ISBN: 978-93-94552-35-7

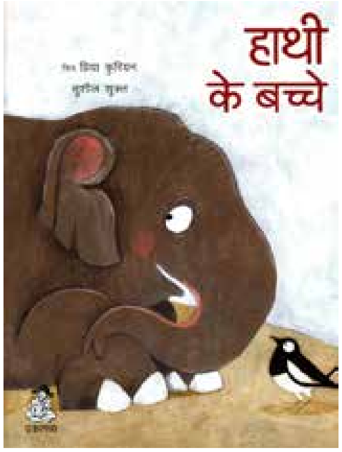

हाथी के बच्चे

यह कविता हमें एक नन्हे हाथी की दुनिया में ले जाती है। उसके जंगल के दोस्त उसके शरीर के हिस्सों को उत्सुकता से देखते हैं और उसकी खासियतों को बयाँ करना उनके लिए एक खेल बन जाता है। कविता में भाषा का खूबसूरत प्रयोग और नए-नए शब्द संयोजन इसे और भी प्रभावशाली बनाते हैं।
नन्हे पाठकों को कल्पना की उड़ान भरने के मौके देने वाली एक मज़ेदार कविता।

सुशील शुक्ल
चित्र: प्रिया कुरियन
ISBN: 978-81-19771-65-3
आकार: 8" x 10.5"
पृष्ठ संख्या: 16

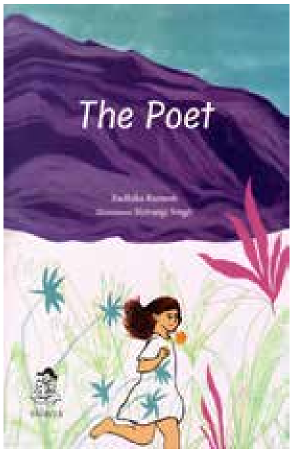

The Poet

Andrea first met Carlos after her mother passed away. In the life of uncertainty that followed, Carlos was the one who was there for her. But Carlos had rules for her to follow and he'd punish her if she broke them. This is Andrea's story of coping with the loss of a dear one, of dealing with difficult emotions and her fight with the 'D'-Mon – Depression.

Written by a young girl, The Poet narrates the author's own experience of coping with grief, loss and depression.

Radhika Ramesh
Illustrator: Shivangi Singh
ISBN: 978-93-91132-95-8
Size: 5.5" x 8.5 "
Pages: 28

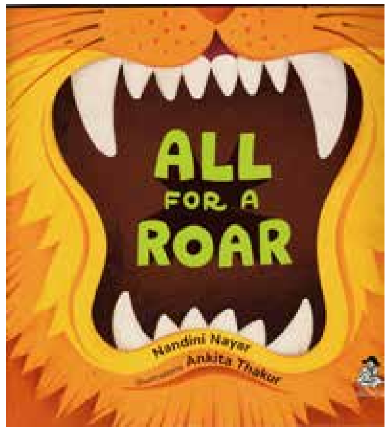

All for A Roar

What Pranav wanted more than anything else, was to roar like a lion.

Nandini Nayar
Illustrator: Ankita Thakur
ISBN: 978-93-48176-28-8
Size: 7" x 8.5 "
Pages: 20

Hero Cake

Every year, the king held a Hero Hunt and the winner would win a prize as well as the privilege of guarding the town against dangers. This year, an unusual contestant joined the fray. How would little Abhi fare against the tall, huge shiningly-oiled men in this contest?

Nandini Nayar
Illustrator: Habib Ali
ISBN: 978-93-91132-28-6
Size: 7" x 8.5 "
Pages: 88

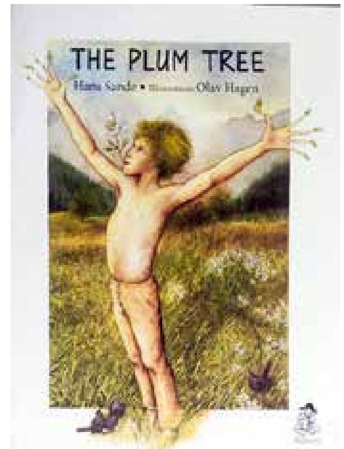

The Plum Tree

One evening, a young boy swallows a plum stone. He thinks little of it. But the next day, he develops a cough that keeps him up through the nights. His father takes him to a doctor and they find the leaf of a plum tree stuck in his throat. Over the next few days, the boy transforms into a plum tree. Life changes dramatically, and he has some important decisions to make.

Hans Sande
Illustrator: Olav Hagen
ISBN: 978-81-19771-42-4
Size: 7" x 8.5"
Pages: 32

एकलव्य

शिक्षा साहित्य

विद्यार्थी, शिक्षक, प्रशिक्षक और उन सभी के लिए जो शिक्षा से इत्तेफाक रखते हैं व शिक्षा व्यवस्था में नवाचार लाने एवं उसे बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं...

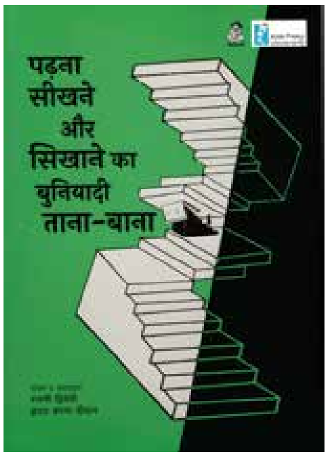

पढ़ना सीखने और सिखाने का बुनियादी ताना-बाना

पढ़ने का अर्थ क्या है? पढ़ना आखिर क्यों ज़रूरी है? कोई पढ़ना भला कैसे सीखता है और पढ़ना सिखाने के लिए क्या उपयुक्त तरीके और मॉडल हो सकते हैं? पढ़ने से जुड़े ऐसे कई पहलुओं पर अलग-अलग समय पर अलग-अलग पृष्ठभूमि के व्यक्तियों द्वारा लिखे गए 18 लेखों का यह संकलन आज बेहद प्रासंगिक है। ये लेख पढ़ने में अर्थ की ज़रूरत व मादरी ज़बान की अहमियत से लेकर पठन सामग्री के चयन के आधार और पढ़ने में 'गलतियों' के औचित्य जैसे मसलों पर बारीकी से बात करते हैं।

विविध लेखक समूह

सम्पादन: रजनी द्विवेदी व हृदय कान्त दीवान

ISBN: 978-81-19771-39-4

आकार: 7" x 9.5"

पृष्ठ संख्या: 186

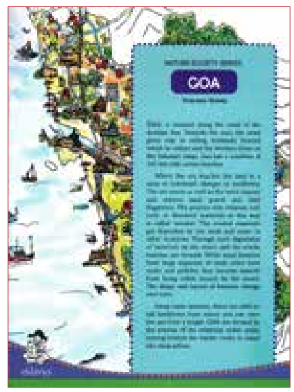

Nature-Society Series: Goa

Yemuna Sunny

Illustrator: Trripurari Sing

978-81-19771-41-7

size: 7" x 10.5"

pages: 16

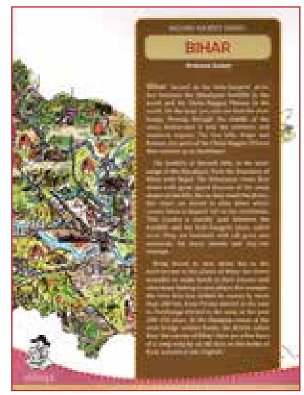

Nature-Society Series: Bihar

Yemuna Sunny

Illustrator: Trripurari Sing

978-81-19771-52-3

size: 7" x 10.5"

Pages: 18

A series of books exploring geography in interface with environment and the society on all Indian states with innovative atlas. Specially useful for secondary and senior secondary students and school teachers.

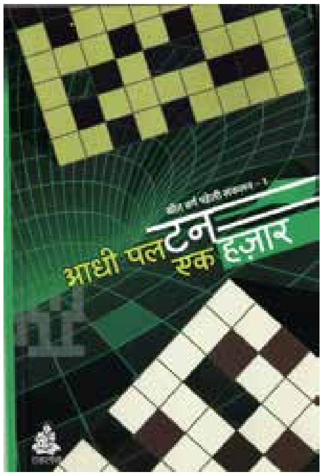

आधी पलटन एक हज़ार

यह किताब वर्ग पहेलियों का एक संकलन है। ये वर्ग पहेलियाँ न सिर्फ मनोरंजक और शिक्षाप्रद हैं बल्कि वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने में भी कारगर हैं। इन्हें तैयार करने का मुख्य उद्देश्य है, एक सक्रिय गतिविधि के माध्यम से पाठकों को विज्ञान की आकर्षक दुनिया का मज़ा लेने के लिए प्रोत्साहित करना।

ISBN: 978-81-19771-04-2

आकार: 5.5" x 8.5"

पृष्ठ संख्या: 72

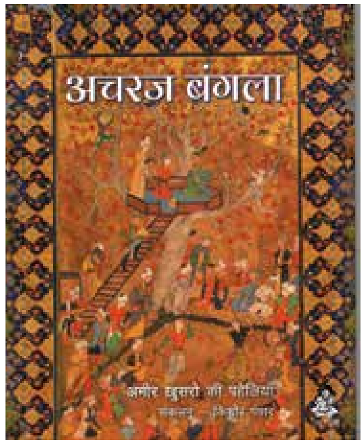

अचरज बंगला
अमीर खुसरो की पहेलियाँ

यह किताब हमारे आसपास दिखने वाले पेड़-पौधों व जीव-जन्तुओं पर आधारित अमीर ख़ुसरो द्वारा लिखी गई पहेलियों का संकलन है। आकर्षक साज-सज्जा के साथ पेश की गई ये पहेलियाँ शिक्षकों, विद्यार्थियों, बच्चों व बड़ों सभी को पसन्द आएँगी।

अमीर ख़ुसरो

चित्र: शिवांगी सिंह

ISBN: 978-81-19771-91-2

आकार: 8" x 10"

पृष्ठ संख्या: 68

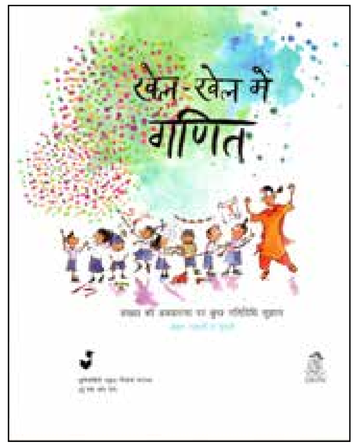

खेल-खेल में गणित

यह किताब शिक्षकों के लिए एक महत्वपूर्ण सहायक संसाधन सामग्री हो सकती है। इसके साथ ही यह बच्चों की प्रारम्भिक गणितीय अवधारणाओं को पुख्ता करने के लिए सही शिक्षाशास्त्र और सामग्री के ज़रिए अवधारणात्मक अधिगम और सार्थक अनुभव मुहैया करवाती है।

विविध लेखक समुह

चित्र: अनिता बालाचंद्रन

ISBN: 978-93-94552-58-6

आकार: 8" x 10"

पृष्ठ संख्या: 108

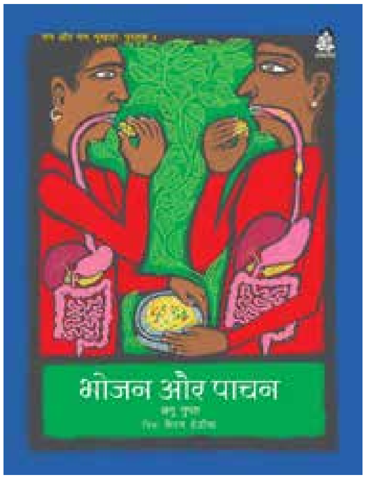

भोजन और पाचन

भोजन, पाचन और कुपोषण पर केन्द्रित यह किताब इनके जैविक से लेकर सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक आयामों की पड़ताल करती है। इसे पढ़कर भोजन क्या है, उसकी क्या भूमिका है, खाना कैसे पचता है, पाचन तंत्र में होने वाली आम गड़बड़ियों के लिए क्या किया जा सकता है जैसे सवालों के जवाब आप जान सकेंगे। इसके अलावा, किताब में पोषक तत्वों की जाँच, ऊँचाई-वज़न का मापन जैसी प्रायोगिक गतिविधियाँ भी शामिल हैं।

अनु गुप्ता
चित्र: केरन हेडॉक
ISBN: 978-81-19771-14-1
आकार: 8" x 10.5"
पृष्ठ संख्या: 100

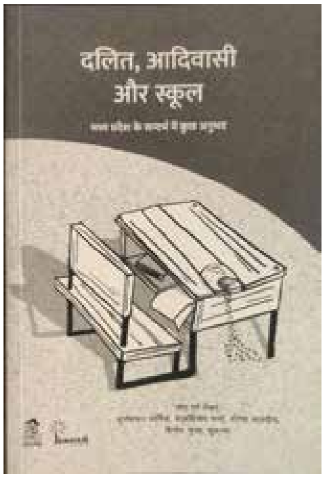

दलित, आदिवासी और स्कूल

यह किताब मध्यप्रदेश के हरदा और उज्जैन ज़िलों के आठ स्कूलों में किए गए अध्ययन के अनुभवों पर आधारित है। यह दलित और आदिवासी समुदायों की शिक्षा के सन्दर्भ में कई महत्वपूर्ण सवाल उठाती है। इसके साथ ही इन समुदायों के बच्चों और उनके अभिभावकों के स्कूली शिक्षा के से जुड़े ज़मीनी अनुभवों को उन्हीं के शब्दों में बयाँ करती है।

विविध लेखक समूह
चित्र: भूपेन्द्र नामदेव
ISBN: 978-81-19771-06-6
आकार: 5.5" x 8.5"
पृष्ठ संख्या: 160

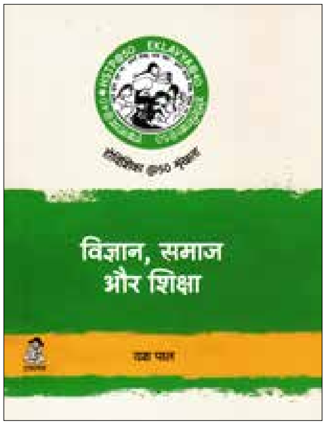

विज्ञान, समाज और शिक्षा

टेपरिकॉर्डर में रिकॉर्ड की गई अपनी आवाज़ भला अपनी क्यों नहीं लगती? काँच की रंगीन चूड़ियों का चूरा सफेद क्यों? रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से उपजे ऐसे जिज्ञासु सवाल स्कूली शिक्षा में जगह क्यों नहीं पाते? इस किताब में प्रकाशित अपने व्याख्यानों में, यश पाल ज़िन्दगी के विज्ञान और स्कूली विज्ञान के बीच खड़ी आधारहीन दीवार पर सवाल खड़े करते हैं। सवाल खड़े करते हैं ऐसे शिक्षण पर भी, जो इस दीवार को भेदने के लिए नवाचारों को प्रोत्साहित नहीं करता।

यश पाल
ISBN: 978-81-19771-51-6
आकार: 4.25" x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 60

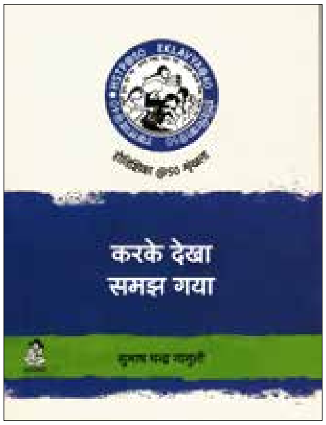

करके देखा समझ गया

यह किताब होविशिका के 50 साल और एकलव्य के 40 साल पूरे होने के मौके पर ज्ञान-विज्ञान के अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़ी किताबों की शृंखला में एक कड़ी के रूप में प्रकाशित की जा रही है। इसमें सुभाष गांगुली ने, 1985 में, एकलव्य के 'करके सीखो विज्ञान' प्रशिक्षण के एक शिविर में जो कुछ करके देखा, समझा, सीखा और जाना – इस कार्यक्रम की प्रक्रिया और विशेषताओं की सम्भावना, प्रासंगिकता, खूबियाँ, खामियाँ, औचित्य – वह सब इस किताब के लेखों में लिख डाला।

सुभाष चन्द्र गांगुली
अनुवाद: सुशील जोशी
ISBN: 978-81-19771-84-4
आकार: 4.25" x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 76

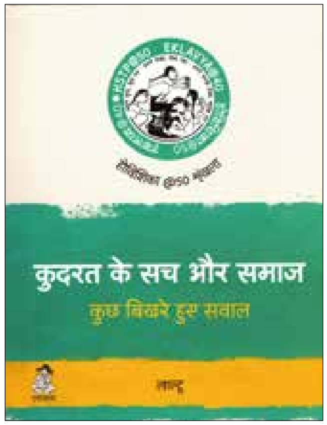

कुदरत के सच और समाज: कुछ बिखरे हुए सवाल

यह किताब होविशिका के 50 साल और एकलव्य के 40 साल पूरे होने के मौके पर ज्ञान-विज्ञान के अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़ी किताबों की शृंखला में एक कड़ी के रूप में प्रकाशित की जा रही है। इस किताब में लाल्टू विज्ञान, वैज्ञानिक प्रवृत्ति, कुदरत व समाज के मायनों और अन्तर्सम्बन्धों को खँगालते हैं, तथा साथ ही, उनसे जुड़ी अपनी चिन्ताएँ और उम्मीदें साझा करते हैं।

लाल्टू
ISBN: 978-81-19771-88-2
आकार: 4.25" x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 52

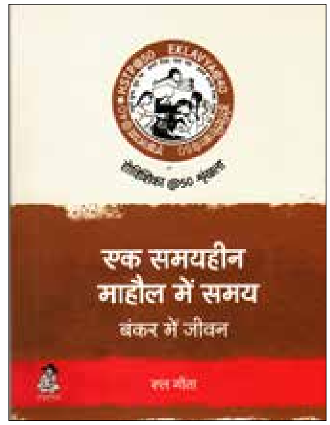

एक समयहीन माहौल में समय: बंकर में जीवन

एक बंकर, जहाँ क्या दिन, क्या रात, कुछ खबर नहीं। समय बताती कोई घड़ी नहीं। ऐसे में, एक प्रयोगकर्ता का समय भला कैसे बीतता होगा? एल गीता ऐसे ही एक बंकर में रहने के अपने अनुभवों को इस किताब में साझा करती हैं। यह किताब होविशिका के 50 साल और एकलव्य के 40 साल पूरे होने के मौके पर ज्ञान-विज्ञान के अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़ी किताबों की शृंखला में एक कड़ी के रूप में प्रकाशित की जा रही है।

एल गीता
अनुवाद: टुलटुल बिस्वास
ISBN: 978-81-19771-00-4
आकार: 4.25" x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 36

दिन भर क्या किया

लाल्टू की कविताओं का यह चित्रमय संकलन मुख्य रूप से किशोरों व नव-साक्षरों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। कविताओं की विषयवस्तु की विविधता पाठकों को न सिर्फ कवि के विविध रचना संसार से बल्कि कविता के विस्तृत दायरे से भी परिचित कराती है।

लाल्टू
अनुवाद: तविशा सिंह
ISBN: 978-81-19771-90-5
आकार: 8.5" x 5.5"
पृष्ठ संख्या: 80

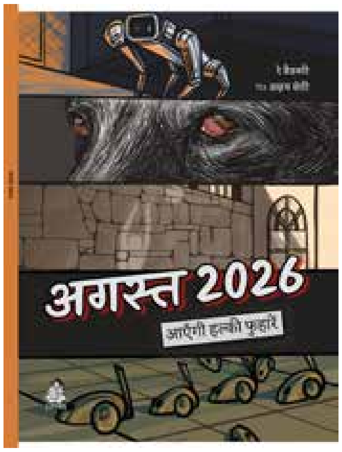

अगस्त 2026: आएँगी हल्की फुहारें

दूसरे विश्व युद्ध के बाद लिखी गई इस मशहूर कहानी में जाने-माने अमरीकी लेखक रे ब्रैडबरी इक्कीसवीं सदी के एक ऐसे दौर की कल्पना पेश करते हैं जहाँ इन्सान मशीनों की मदद से अपनी ज़िन्दगी को बहुत आसान बना चुका है। मशीनी तरक्की से ज़िन्दगी बेशक आसान बनी है लेकिन क्या यह तरक्की उस तबाही से इन्सान को बचा सकती है जिसके दरवाज़े उसने खुद बनाए हैं? इस सवाल के त्रासद जवाब को उकेरती यह कहानी पहली बार हिन्दी में ग्राफ़िक रूप में...

रे ब्रैडबरी
अनुवाद: लाल्टू
चित्र: अक्षय सेठी
ISBN: 978-81-19771-99-8
आकार: 7" x 9.5"
पृष्ठ संख्या: 48

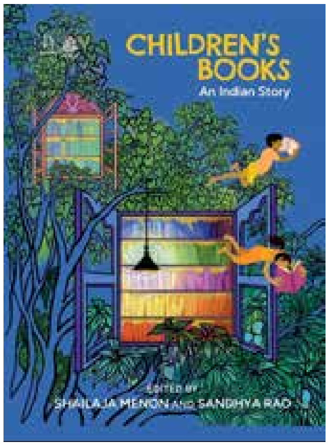

Children's books: An Indian Story

The children's book publishing industry in India is thriving, evident from the variety of books produced post-liberalisation, especially in English language. Are these books significantly different from earlier ones? What has been the industry's journey, its accomplishments, and challenges? How well do they reflect the diverse realities and experiences of Indian children? Have unique voices emerged, or is the industry still seeking them? These questions are explored in essays by pioneers and practitioners of Indian children's literature, including publishers, authors, illustrators, editors, translators, librarians, and educators. Avoiding jargon, the essays appeal to anyone interested in children's literature.

Shailaja Menon &
Sandhya Rao (eds)
ISBN: 978-81-19771-219
Size: 8" x 11"
Pages: 428